ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 24th May 2018, Revised on 28th May 2018; Accepted 16th June 2018

आलेख

सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता का अध्ययन

* **डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा** (शोध निर्देशक) एवं **रमेश कुमार**, शोधकर्ता
आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान
email – ramesh.rahar38@gmail.com, Mob.-8949339399

Key words: *निडर, जल्दी से सवाल जवाब करने, कार्यशील, आदर्शवादी, आदतें, कार्यक्षमता आदि.*

प्रस्तावना

जीवन के प्रारम्भिक काल में व्यक्ति का व्यक्तित्व विद्यालय से प्रभावित हुआ होता है। उसकी भूमिका को नकारा नही जा सकता, क्योंकि प्रत्येक बालक का व्यक्तित्व विशेष होता है। अलग–अलग सक्षमता वाले विद्यार्थियों में जल्दी घुल–मिल जानेवाले, निडर, जल्दी से सवाल जवाब करने, कार्यशील, आदर्शवादी आदि अनेक गुण अलग–अलग होते हैं।

विद्यार्थी चाहे किसी भी सक्षमता वाला हो, उनके लिए उनकी कार्यक्षमता उनकी भावी सफलता का सम्बल बनेगा। विद्यार्थी कक्षा शिक्षण के दौरान अपने शिक्षण पाठ्यक्रम में पाठ्यक्रम के समस्त प्रयासों को कैसे ग्रहण करेगा, उसकी पूर्व योजना विधि, योजना प्रविधि, उसके आत्मविश्वास का संकेत करती है, जो उसके व्यक्तित्व की विशेषता है और इसी शोध का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों में विद्यमान कार्यक्षमता को खोजना है।

विकलांग अपनी क्षमताओं को पहचानें और इनका विकास करें तभी उसका जीवन सुखमय हो सकता है। वे दूसरों पर आश्रित न रह कर आत्मनिर्भर बनें। क्योंकि आज व्यक्ति या राष्ट्र चाहें वे किसी भी अवस्था में हो, दूसरों पर निर्भर रहकर जीवित नहीं रह सकते हैं। इसी सन्दर्भ में **आर. के. मिश्रा** का कथन है कि – ''विकलांग एकमात्र विज्ञान देवता की उपासना करें तो उन्हें किसी प्रकार का अभाव न होगा। विज्ञान तो मात्र संकेत पर ही व्यक्ति को धन धान्य से परिपूर्ण कर देना चाहता है। अतः विकलांग इस तथ्य को पहचानें एवं अपने जीवन दर्शन में परिवर्तन करें।

अध्ययन का महत्व

मनोवैज्ञानिक धारणा एवं मानव जीवन की प्रकृति का विशिष्ट तथ्य यह है कि इस सृष्टि में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से विविध आधारों, सक्षमताओं एवं आदतों के चलते एक दूसरे से भिन्न है। व्यक्ति से व्यक्ति भिन्नता एक ध्रुव सत्य है। शिक्षा व सिखाने के मनोविज्ञान में वैयक्तिक भिन्नताओं का ध्यान रखना मुख्य घटक है। किसी भी व्यक्ति की कार्यक्षमता उसके शैक्षिक जीवन एवं सिखने के स्तरों पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। अनेक मनोवैज्ञानिक शोधों से यह तथ्य तो स्पष्ट हो गया है कि भिन्न–भिन्न क्षमताधारी व्यक्तित्व का जीवन पैटर्न व्यवहार, आदतें, कार्यक्षमता आदि भी अलग–अलग होती है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की जन्मजात या संग्रहीत सक्षमताओं की भिन्नता के चलते उनके भावी जीवन के पैटर्न पर भी प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में सामान्य–विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता के स्तरों को जानने का प्रयास किया गया है, जिसके परिणामों से शिक्षा जगत में यह तथ्य सामान्य हो पायेगा कि इस प्राकर की क्षमताओं के बालकों की शैक्षिक आयोजना किस प्रकार की होगी? तथा उनके लिए जीवन निर्देशन कैसा होना चाहिए? शिक्षकों को उन्हें किस प्रकार के अध्ययन व कार्य करवाने चाहिए? आदि प्रश्नों का उत्तर मिल सकेगा।

अध्ययन का औचित्य

किसी भी कार्य को करने से पहले उसका औचित्य ध्यान में रखना आवश्यक है। शोध अध्ययन के औचित्य के द्वारा हम यह सिद्ध कर सकते हैं कि अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे।

किशोर विद्यार्थियों से संबंधित जो भी साहित्य उपलब्ध हुआ, उसके अध्ययन के उपरांत शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता का अध्ययन इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विषय हैं।

आज तक कार्यक्षमता से सम्बन्धित प्रमुख शोधकार्यो में :– ज्योति, डी. अरूण तथा रेडी, आई. वी.रमन्ना (1996) ने ''सामान्य तथा बधिर छात्रों के समायोजन तथा आत्मविश्वास के तुलनात्मक अध्ययन'' किया, चतुर्वेदी, अर्चना (1997) ने ''आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनशीलता का व्यक्तित्व और शैक्षिक नि पति के सम्बन्ध में अध्ययन'' किया, बिन्दु, सी.एम (1998) ने ''माध्यमिक स्तर के श्रवणहीन तथा सामान्य छात्रों के आत्मविश्वास तथा सामाजिक व्यक्तिगत समायोजन के अध्ययन'' किया, विश्नोई, कविता (2000) ने ''लखनऊ शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय का शैक्षिक निष्पति के सम्बन्ध में अध्ययन'' किया है।

शोधकर्ता ने पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों का पुनरावलोकन किया तथा यह पाया कि सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों को लेकर कोई भी शोधकार्य अभी तक नहीं किया गया है और न ही कार्यक्षमता चर को एक साथ लेकर किया गया कोई अध्ययन अभी तक प्रकाश में आया है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययकर्ता ने सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों के अलग–अलग गुणों को खोजना चाहा है। इसलिए शोधकर्ता ने ***''सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता का अध्ययन''*** करने का निश्चय किया।

समस्या कथन

''सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य

सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध को राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग तक परिसीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के 15 से 17 वर्ष तक के सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में विकलांगता से आशय हाथ एवं पैर की विकलांगता तक परिसीमित किया गया है।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त नि क र्ा वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

कार्यक्षमता मापनी

शोधकर्ता ने अपने शोध में स्वनिर्मित कार्यक्षमता मापनी का प्रयोग किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M)] प्रमाणिक विचलन (SD) एवं क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) की गणना की गयी है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता

विद्यार्थियों का समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
सामान्य	100	35.96	8.24	0.11	सार्थक अन्तर नहीं है।	
विकलांग	100	34.20	7.26			

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों की कार्यक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक उपयोगिता

1ण शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरन्तर अन्वेषण के परिणामस्वरूप समाज में एक नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य को पूर्णता प्रदान की जा सकती है।

2ण प्रस्तुत शोध कार्य में सामान्य एवं विकलांग किशोर विद्यार्थियों में कार्यक्षमता का विकास करने हेतु अभिप्रेरित करने का प्रयास किया गया है।

3ण अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर अलग–अलग सक्षमता वाले विद्यार्थियों में संरचनात्मक परिवर्तन को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जा सकेगा।

4ण इस प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करेंगे। शोधकर्ता इस प्रकार की समस्याओं पर भविष्य में निरन्तर कार्य करने का प्रबल इच्छुक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005) : ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327
2. कपिल, एच के. (1979) : अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या–23
3. कुंवर भुवनेन्द्र सिंह, (2004) : ''स्वाध्याय एक साधना'' कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.
4. कोठारी, सी.आर. (2008) : ''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या–2
5. खान, ए.आर. (2005) : ''जीवन कौशल शिक्षा'' माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर पृष्ठ संख्या–14
6. गुप्त, नत्थूलाल (2000) : मूल्य परक शिक्षा और समाज' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली पेज–122
7. गौड़, अनिता (2005) : ''बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे'' राज पाकेट बुक्स नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–14
8. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005) : ''पारिवारिक सुख के लिए है। किशोर मन की समझ'' श्रीविजय इन्द्र टाइम्स नई–दिल्ली, अंक–8, पृष्ठ संख्या–25

*** Corresponding Author:**

डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा (शोध निर्देशक) एवं रमेश कुमार, शोधकर्ता
आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान
email – Ramesh.rahar38@gmail.com, Mob.-8949339399